REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

भुआणा संस्कृति और हरदा जिले के क्षेत्रीय ऐतिहासिक स्थलों का संक्षिप्त अध्ययन

डॉ. विमला मरावी[1] , राजेन्द्र प्रसाद पटेल[2]
[1]सहायक प्राध्यापक (इतिहास) शास.महाविद्यालय उमरिया (म.प्र.) भारत.
[2]अतिथि विद्वान (अर्थशास्त्र) शास.महाविद्यालय उमरिया (म.प्र.) भारत.

सारांशः–

हरदा जिला म0प्र0 के पर्यटन स्थलों एवं राजपरिवारों की संग्रह स्थल है यहाँ पर मुगलों के शासन काल की सत्ता व्यवस्था की वीरगाथा है। हरदा विभिन्न धर्मो का संग्रह स्थल था यहाँ पर विभिन्न सभ्यता संस्कृति का उद्भव एवं उद्गम स्थल माना गया है।

परिचय :–

भुआणा की लोक संस्कृति आत्मनिर्भता की रही है। परम्परागत कार्यो में विश्वास और रूढ़िवादिता नें इन्हे अन्य समुदायों से अलग रखा है। भुआणा संस्कृति की अपनी सांस्कृतिक मान्यताऐं, प्रथाऐं और विश्वास है।

भुआणा अर्थात "भू" का आ जाना। दरअसल आज भी पास के अंचल निमाड़ की जमीन उॅची–नीची पथरीली है। लेकिन भुआणा अंचल की मिट्टी काली और जमीन समतल है। इसीलिये निमाड़में आज भी ग्रामीण लोग पद यात्रा करते हुए इस अंचल क्षेत्र की तरफ बढ़ते हैं तो कहते हैं–"लो भुई आ गई"अर्थात् भूमि (खेती की जमीन) का आ जाना। साथ ही भुआणा अर्थात् वह भूमि जो अन्न से समृद्ध है। जो अन्नपूर्णा है, अन्नदाता है, वह भूमि भुआणा हुई।

आज भी हरदा जिला अन्न के उत्पादन अर्थात् गेहूँ उत्पादन में **मिनी पंजाबी** के नाम से जाना जाता है। यहाँ पर गेहूँ का अनाज सर्वाधिक मात्रा में प्रति एकड़ उत्पादन होता है। भुआणा शब्द बहुत पहले से ही अस्तित्व में चला आ रहा है। नर्मदा घाटी का इतिहास पृथ्वी के अस्तित्व मे आनें के साथ का इतिहास है। भुआणा अंचल इसी नर्मदा घाटी का हिस्सा है। पुरातात्विक की दृष्टि से इस क्षेत्र में बहुत समय से उत्खनन कार्य होता रहा है। जिसमें विभिन्न स्थानों पर पाषाण युगीन सामाग्री प्राप्त हुई है।

भुआणा की धरती पर नंद वंश,मौर्य वंश, युग वंश, खिलजी से लेकर मुगल, मराठों एवं अंग्रेजों का शासन रहा। भुआणा अंचल का गाँव हण्डिया पौराणिक काल से चर्चित रहा है। यहाँ का प्रसिद्ध **रिद्धनाथ** और **सिद्धानाथ** मंदिर नर्मदा का **नाभि कुण्ड** पर स्थित है।

जोगा, मकड़ाई व चारुवा यहां के ऐतिहासिक गांव है। यहां की मुख्य बोली भुआणी ही है जो गुर्जरों, गाडरी, सुतार जातियों में पूरी तरह प्रचलित है। यहां पर कहीं–कहीं मालवी, बुन्देली, निमाड़ी, गोंडी और मारवाड़ी बोली भी प्रचलित है। वर्तमान में भुआणा क्षेत्र की संस्कृति और परंपरा को कायम रखते हुये भुआणा उत्सव का आयोजन किया जाता है। भुआाणा उत्सव का आगाज रोमांच, आस्था, इको टूरिज्म, रंगा–रंग आयोजन के साथ होता है। नर्मदा तट हण्डिया में नर्मदा की महाआरती से हजारों दीपों से नर्मदा तट जगमगा उठता है और आतिशबाजी के साथ भुआणा उत्सव का शंखनाद हो जाता है।

संस्कृति की आत्मा है, संगीत। संगीत की धुन से कोई अछूता नहीं है। जिले का पर्व भुआणा उत्सव में वीणा वादन, बॉसुरी वादन, नर्मदा अष्टक व अन्य सांस्कृतिक प्रस्तुतियॉ हण्डियां के रिद्धनाथ मंदिर में खूबसूरती के साथ के पेश की जाती है।

भुआणा उत्सव के दौरान पानी से घिरे जोगा की प्राकृतिक छटा के बीच नर्मदा नदी पर नौका दौड़ का आयोजन किया जाता है। तेली की सराय से नर्मदा के नाभि कुण्ड के दर्शन और रिद्धनाथ घाट तक पर्यावरण को ध्यान में रखते हुये इको टूर, साइकिल रैली आयोजित की जाती है। जिसमे जिले के कलेक्टर, एस. पी. एवं विधायक सहित गणमान्य लोगों द्वारा हिस्सा लिया जाता है।

भुआणा उत्सव के कार्यक्रम का समापन पूर्व रियासत मकड़ाई के किले में भुआणा उत्सव थीम सांग के साथ देशभक्ति,लावणी नृत्य,गणगौर नृत्य,मटकी नृत्य घूमर नृत्य छाउ नृत्य और भगौरिया नृत्य के द्वारा समा को खूबसूरत बना दिया जाता है साथ ही क्षेत्रीय ऐतिहासिक स्थलों की प्रदर्शिनी भी आयोजित की जाती है।

पर्यटन और लोकसंस्कृति तथा जिला पर्यटन विकास परिषद हरदा के तत्वाधान में यह उत्सव तीन– चार दिन तक आयोजित किया जाता है हरदा भुआणा उत्सव के माध्यम से हरदा के विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों को पर्यटन के दृष्टिकोण से विकसित करनें तथा ऐतिहासिक स्थलों को राष्ट्रीय पहचान दिलानें के लिये उत्सव के माध्यम से अलग – अलग स्थानों का साहित्यिक व सांस्कृतिक आयोजित किये जा रहे है।

2. परिचय :–

हरदा क्षेत्र ऐतिहासिक धरोहरों से परिपूर्ण है। नर्मदा घाटी और सतपुड़ा के पहाड़ियों के मध्य में स्थित हरदा को राष्ट्र पिता महात्मा गांधी द्वारा हृदय नगरी का दर्जा दिया गया था नर्मदा घाटी में मानव की उपस्थिति लगभग दो लाख वर्ष पूर्व से मानी जाती है। हरदा नर्मदा नदी के समीप बसी नगरी है मानव की लम्बी विकास यात्रा के चिन्ह मध्यप्रदेश के हरदा जिले में बिखरे पड़े हुए है हरदा जिले की टिमरनी तहसील में जंगलों के कुछ गांव में आज शैल चित्र विद्यमान है। हरदा जिले गांव गोम गांव की नदी और तटवर्ती क्षेत्र में आज भी फासिल्स पाए जाते है। यह जिला गेहूँ उत्पादन में **मिनी पंजाब** के नाम से प्रदेश में जाना जाता है।

हरदा जिला पहले होशंगाबाद जिले के अन्तर्गत आता था वर्ष 1873 से ही यहां सर्वेक्षण कार्य होते रहे है वर्ष 1958–59 एवं 1973 में यहां हुए अन्वेषणों मे 35 जीवाश्म युक्त पाषाण उपकरण अमरकंटक के अलावा हरदा मे पाए गये है। हरदा जिला अपनी पुरातात्विक, ऐतिहासिक, एवं पर्यटन संबंधी धरोहरो की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध एवं शोध संभावनों से भरा है हरदा जिले की हण्डिया तहसील में मुल्ला दो प्याजा मजार स्थित है जो सम्राट अकबर के नवरत्नों मे से एक थे भड़ंग शाह के दरगाह और मुगलकालीन निर्माण कला के विशिष्ट प्रतीक के रूप में अपने वास्तु सौंदर्य के रूप में तेली की सराय सहित कई और ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक धरोहर इस क्षेत्र में विद्यमान है।

मकड़ाई का किला :–

मकड़ाई भूतपूर्व रियासत मकड़ाई का मुख्य ग्राम है यह किला हरदा मुख्यालय से 37 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। मकड़ाई ग्राम में स्थित उॅची पहाड़ी पर स्थित एक प्राचीन किला है यहां का राजघराना राजगोंड़ परिवार का वंशज है मकड़ाई के किले में राजभवन का काष्ठकला है अपनें आप में ही विशिष्टता को दर्शाती है मकड़ाई में ही सर्वप्रथम डाक एवं टेलीफोन इकाइयां स्थापित हुई थी मकड़ाई किले में स्थित राजा की कचहरी, रनिवास एवं राममंदिर के समीप रखी छोटी तोप राजपरिवार की अप्रतिम विरासत है। पर्यटन की दृष्टि से मकड़ाई का क्षेत्र प्रकृतिक एवं वन संम्पदा से परिपूर्ण है

जोगा का किला :–

हरदा जिले का जोगा ग्राम हरदा मुख्यालय से 46 किलोमीटर उत्तर पश्चिम में नर्मदा किनारे स्थित है। जोगा शासकीय आरक्षित वन का एक विशिष्ट वन भाग है। यहां का मुख्य आकर्षण है– नर्मदा नदी में दो जल धाराओं के बीच उॅचे टीले पर निर्मित यह मुगलकालीन जोगा का किला। भव्य वास्तुकला एवं इतिहास को अपनी अंदर संजोय यह प्राचीन किला पर्यटकों को मन मुग्ध कर देता है जोगा से नाव के द्वारा पर्यटक किले के टीले तक पहुॅचते है। किले की चारदीवारी से प्रवाहित होती हुई नर्मदा का दृश्य अत्यन्त मनमोहक दिखाई पड़ता है कहा जाता है कि इसका निर्माण औरंगजेब द्वारा कराया गया था,जो होशंगाबाद एवं हाण्डिया स्थित दो किलो के साथ –साथ हुसंगशाह गौरी द्वारा निर्मित कराया गया था नर्मदा के दूसरे तट पर पिंडारी किले अवशेषों जोगा के दो भूतपूर्व गवर्नरों मकबरे भी जोगा ग्राम में विद्यमान है। मुगल काल में जोगा किले का सामरिक महत्व था किले के उपर से नर्मदा की जलधारा शायंकाल में सूर्यस्त का दृश्य बहुत ही आकर्षक दिखाई देता है ।

तेली की सराय :–

मुगल कालीन निर्माण कला के विशिष्ट प्रतीक के रूप में अपने वास्तु सौंदर्य के रूप में तेली की सराय प्रसिद्ध है । सराय को राज्य शासन द्वारा संरक्षित स्मारक की श्रेणी में शामिल किया गया है। इतिहासकारों के अनुसार 17 वीं‘शताब्दी में इस सराय का निर्माण एक तेली बैंकर द्वारा अपनें ग्राहकों को ठहरवानें के लिए किया गया था वही कुछ लोगों का मानना है कि यह मुगलकाल में सैनिक छावनी के रूप मे प्रतिष्ठत स्थल रहा है सराय के उत्तर और दक्षिण दो प्रवेश द्वार है। मुगलकाल में यह स्थल

सामरिक दृष्टिकोण से एक महत्वपूर्ण प्रशानिक इकाई था सराय के मध्य में एक बावड़ी निर्मित है यह सराय हरदा के क्षेत्र के मुगलकाल में वैभव का भव्य स्मारक है।

नाभि कुण्ड :–

हरदा जिला मुख्यालय से 21 किलोमीटर दूर उत्तर में प्राचीन नाभि कुण्ड है मान्यता है कि नाभि कुण्ड नर्मदा के मध्य बिन्दु पर स्थित है यह स्थान पौराणिक ऐतिहासिक धरोहर से परिपूर्ण है साथ ही यह लोगो की आस्था का प्रमुख केन्द्र है। नाभि कुण्ड के उत्तर तथा दक्षिण में सिद्धनाथ तथा रिद्धनाथ मंदिर अपनें कलात्मक एवं वस्तुकला की सौन्दर्यता के लिए प्रसिद्ध है। इतिहास में चंपावती नगरी तथा खुदाई के दौरान प्रगट हुआ वर्तमान में चारूवा स्थित गुप्तेश्वर मंदिर ऐतिहासिक मंदिर है। महाराष्ट्र के प्रान्त के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल पंढरपुर से लगाई गई अखण्ड जोत विगत 50 सालों से हरदा के ग्राम कुड़ावा में स्थित है जो जल रही है यहाँ स्थापित गुरूगादी दरबार पूरे भारतवर्ष में **द्वितीय पंढरपुर** के नाम से प्रसिद्ध है।

मजार :–

मुल्ला दो प्याजा की मजार मुगुल सम्राट अकबर के नव रत्नों प्रमुख स्थान पानें वाले वजीर अब्दुल हसन जिन्हे मुल्ला दो प्याजा के नाम से जाना जाता है। अकबर के वजीर अब्दुल हसन मुल्ला दो प्याजा के देहांत हाण्डिया में हुआ था। हाण्डिया ग्राम में उनकी स्मृति में एक स्मारक का निर्माण चबूतरे पर किया गया है यह दरगाह लगभग 15 वी शताब्दी में निर्मित है तथा सर्व धर्म समभाव के प्रतीक के रूप में आस्था का प्रमुख केन्द्र बिन्दु है।

हाण्डिया शाह भड़ंग दरगाह :–

नर्मदा के किनारे स्थित हाण्डिया से लगभग 2 किलोमीटर दक्षिण दिशा में हाण्डिया शाह की भड़ंग की इबादत का स्थान है। यहीं पर उनकी दरगाह बनी हुई है दरगाह स्थान पर एक आयताकार पत्थर शहंशाह नाजीरूद्दीन (हाण्डिया शाह भड़ंग) की याद में रखा गया है ऐतिहासिक दृष्टि से यह प्रसिद्ध पर्यटक स्थल है।

सांगवा का किलाः–

यह किला माचक नदी के तट पर सोलहवी शताब्दी मे इसका निर्माण किया गया था वर्तमान में यह किला एवं यहाँ स्थित शिव मंदिर राज्य शासन द्वारा संरक्षित स्मारक के रूप में प्रतिष्ठित है किले के मुख्य प्रवेश द्वार के दायीं ओर भवन के अवशेष तथा बायीं तरफ जोगेश्वर भगवान का मंदिर स्थित है। किले के मुख्य आंगन में एक हवन कुण्ड एवं पाषाण निर्मित मंदिर स्थित है। इस किले के खण्डहरे स्थल अपनें प्राचीन गौरव की गाथा स्वयं बखान करते है।

सन्दर्भ ग्रंथ :–

1. धरोहर –हरदा इतिहास,संस्कृति एवं पर्यटन
2. पत्रिका– मेरा हरदा 2011–12
3. परीक्षा मंथन –2011–12
4. भारतीय गजेटियर मध्यप्रदेश भोपाल 1971
5. मध्यप्रदेश सामान्य अध्ययन इन साइक्लोपीडिया(चतर्थ संशोधित संस्करण)
6. यूनिक सामान्य अध्ययन